इकाई 12 वैश्विक प्रतिरोध (वैश्विक सामाजिक आंदोलन और गैर–सरकारी संगठन)

संरचना

12.0 उद्देश्य

12.1 परिचय

12.2 वैश्विक प्रतिरोध

12.3 आधारभूत सैद्धांतिक योग

12.4 वैश्वीकरण का विरोध

12.5 वैश्विक सामाजिक आंदोलन

12.5.1 प्रतिरोध आंदोलन : सामाजिक आंदोलन के प्रकार

12.6 सामाजिक आंदोलन और गैर–सरकारी संगठन

12.7 सारांश

12.8 कुछ उपयोगी संदर्भ

12.9 प्रगति अभ्यास के उत्तर

12.0 उद्देश्य

यह इकाई वैश्वीकरण, वैश्विक प्रतिरोध, वैश्विक सामाजिक आंदोलनों और गैर सरकारी संगठनों की भूमिका पर केंद्रित है। इकाई के अध्ययन के बाद, आपको निम्नलिखित करने में सक्षम होना चाहिए :

- वैश्विक प्रतिरोध को परिभाषित करना
- वैश्विक प्रतिरोध में अंतर्निहित विभिन्न सैद्धांतिक योगों पर चर्चा करना
- वैश्विक सामाजिक आंदोलन एवं वैश्वीकरण पर उनके प्रभाव को समझना तथा
- वैश्विक सामाजिक आंदोलनों में गैर–सरकारी संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका का मूल्यांकन करना।

12.1 प्रस्तावना

वैश्वीकरण एवं इसका प्रतिरोध दोनों ही इक्कीसवीं सदी को परिभाषित करते हैं। वैश्विक प्रतिरोध एक सामाजिक आंदोलन है जिसका राजनीतिक उद्देश्य वैश्वीकरण की विकृतियों में बदलाव लाना और विरोध करना है। अक्सर इन आंदोलनों के ऐसे संस्करण होते हैं जो वैश्वीकरण की पूरी प्रक्रिया का विरोध करते हैं। इन्हें वैश्विक न्याय आंदोलन, वैश्वीकरण बदलाव आंदोलन, विश्व–विरोधी आंदोलन, कॉर्पोरेट विरोधी वैश्वीकरण आंदोलन या नवउदारवादी वैश्वीकरण विरोधीआंदोलन आदि के रूप संदर्भित किया जाता है। हालांकि, इनमें से अधिकांश शब्द आर्थिक वैश्वीकरण में विश्वास करनेवालों द्वारा दिए गए हैं और इसलिए ये प्रतिरोधियों के परिप्रेक्ष्य का

पर्याप्त वर्णन नहीं कर सकते हैं। इन आंदोलनों में भाग लेने वाले लोग अपनी आलोचनाओं का आधार कई संबंधित विचारों को बनाते हैं। इनकी आलोचनाओं का आधार उदार वित्तीय/व्यापार संस्थानों (जैसे आईएमएफ, डब्ल्यूटीओ, ओईसीडी) का विरोध, धन के माध्यम से बेलगाम राजनीतिक शक्ति वाले बड़े अंतर्राष्ट्रीय निगमों का विरोध,सांस्कृतिक विचारों की हानि और पर्यावरण को नुकसान भी हो सकता है। उनका मानना है कि वैश्वीकरण ने राष्ट्रीय विधायी प्राधिकारियों की अखंडता को कमजोर कर दिया है, और पूंजीवादी निगमों के अनुरोध पर उदार सूक्ष्म और वृहद आर्थिक नियम बनाने वाली प्रक्रियाओं द्वारा कई देशों की स्वतंत्रता और संप्रभुता का उल्लंघन किया गया है। प्रौद्योगिकी ने दोनों, वैश्वीकरण की ताकतों के साथ–साथ इसका विरोध करने वाली ताकतों ,की मदद की है। राज्यों के नियंत्रण से परे तीव्र और तत्काल अंतर–संचार ने प्रतिरोधियों को प्रतिकूल प्राधिकारियों से एक कदम आगे रहने के लिए सशक्त बनाया है। हम शीत युद्ध की समाप्ति के बाद से दुनिया भर में बढ़ते लोकप्रिय प्रतिरोध आंदोलन के गवाह हैं, जैसे सबसे हाल ही में अरब स्प्रिंग विरोध, इराक के आक्रमण के खिलाफ दुनिया का सबसे बड़ा समन्वित युद्ध विरोधी आंदोलन, से लेकरऑक्युपाई वॉल स्ट्रीट आंदोलन के उदय और दुनिया भर में स्वदेशी प्रतिरोध आंदोलन के उदय तक। वैश्वीकृत दुनिया को जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, गरीबी और आर्थिक संकट जैसी नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इन चुनौतियों की कोई सीमा नहीं है और किसी भी देश या अंतर–सरकारी संस्थानों द्वारा इनको हल नहीं किया जा सकता है। इन्हें केवल उन बलों के समन्वित प्रयासों द्वारा हल किया जा सकता है जो वैश्वीकरण में समाधान चाहते हैं और जो इस प्रक्रिया का विरोध करते हैं।

12.2 वैश्विक प्रतिरोध

वैश्वीकरण का वर्तमान प्रतिरोध यह है कि यह एक साथ इसका विरोध करने और इसमें सुधार लाने की दिशा में कार्य करता है। कुछ सामाजिक विचारधारायेंप्रत्यक्ष और भागीदारी वाले लोकतंत्र एवं स्वायत्त समुदायों (कभी कभार ये ''स्थानीय विनिमय व्यापार प्रणाली'' जैसी वैकल्पिक आर्थिक संरचनाओं का उपयोग भी करते हैं) के लिए काम करती हैं जब कि कुछ दूसरी वास्तविक प्रतिनिधितात्मक और लोकतांत्रिक जवाबदेही वाली अंतर्राष्ट्रीय राजनैतिक संरचना का समर्थन करती हैं। (वैश्वीकरण का विरोध : ऐसा शीत युद्ध के बाद वैश्विक परस्पर जुड़ाव की तेज प्रक्रिया के प्रकाश में दुनिया भर में लोकतंत्रीकरण के लिए मांगों के प्रसार की पृष्ठभूमि के खिलाफ हुआ है। (कुमार चंचल और अन्य 2017 : 70) इन विरोधों, ने अक्सर तारीख, जिस पर वे हुईं (जैसे, जे 16 के लिए ''16 जून'') या केंद्रीय शहर, जो कब्जा कर लिया गया है (जैसे, ''सिएटल के लिए लड़ाई'') का नाम ले लिया है, ने लगभग हर प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय राजनैतिक और आर्थिक बैठक के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होना जारी रखा है। इसके अतिरिक्त, 9/11 के बाद से, वैश्वीकरण विरोधी आंदोलन तेजी से पश्चिम एशिया में अमेरिका और ब्रिटेन के सैन्यवादी नीतियों को लक्षित करने वाले युद्ध विरोधी मूलभूत आंदोलन से जुड़ गया है। मैरी कालडोर का तर्क है कि ''वैश्विक नागरिक समाज (जीसीएस) वैश्वीकरण को ''सभ्य'' या लोकतांत्रिक बनाने की प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समूह, आंदोलन और व्यक्ति कुछ हद तक कानून, वैश्विक न्याय और वैश्विक सशक्तिकरण के वैश्विक नियम की माँग कर सकते हैं।" जीसीएस की पहचान ''परिवार, बाजार और राज्य के संस्थागत परिसरों से बाहर स्थित विचारों,

मूल्यों, नेटवर्क और व्यक्तियों के क्षेत्र के रूप में की जाती है, और राष्ट्रीय समाजों, राजनीति और अर्थव्यवस्थाओं के दायरे से परे है'' (कालडोर, 2000)।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) इकाई के अंत में अपने उत्तर के लिए सुझाव देखें।

2) समझाएँ कि वैश्वीकरण और वैश्विक प्रतिरोध वर्तमान सदी को कैसे परिभाषित करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

12.3 आधारभूत सैद्धांतिक योग

जेके गैलब्रेथ द्वारा विकसित 'प्रतिकारी शक्ति' के सिद्धांत के माध्यम से वैश्विक नागरिक समाज के उद्‌भव की व्याख्या सबसे अच्छी तरह की जा सकती है। उनके विचार से, उद्‌गामी वैश्विक नागरिक समाज वैश्वीकरण प्रक्रिया के भीतर कॉर्पोरेट हितों के कथित वर्चस्व पर सीधी प्रतिक्रिया है। इसलिए वैश्विक नागरिक समाज का उदय नव उदारवाद की जीत के खिलाफ प्रतिक्रिया का हिस्सा है (बुजान, 2004)। कुछ ऐसे विद्वान हैं जो सामाजिक प्रतिरोध को राजनीतिक कार्यों के रूप में देखते हैं। उदाहरण के लिए, गिल्स (2000 : 4) सामाजिक प्रतिरोध को "राजनीतिक कार्रवाई जो सामान्य या सामाजिक हित का प्रतिनिधित्व करनेवाला एवं राजनीतिक स्थिति को बदलने और एक वास्तविक विकल्प का उत्पादन करने की क्षमता वाला है" के रूप में परिभाषित करते हैं। फिर कुछ अन्य विद्वान हैं जो वैश्विक प्रतिरोध को वैश्वीकरण के लिए एक सांस्कृतिक प्रतिक्रिया के रूप में देखते हैं। चिन और मिट्टेल्मैन (2000 : 30) लिखते हैं "प्रतिरोध आंदोलनों को पूरी तरह से वैश्वीकरण के लिए एक राजनीतिक प्रतिक्रिया के रूप में नहीं समझा जा सकता है। बल्कि, प्रतिरोध आंदोलन वैश्वीकरण प्रवृत्तियों द्वारा आकार लेते हैं और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं का संघटन होते हैं।" 'प्रतिरोध क्या है, इसका दायरा क्या है और इसे कैसे परिभाषित किया जाना चाहिए' विषय पर विद्वानों के मतभेद सामाजिक प्रतिरोध को सैद्धांतिक रूप देने की प्रक्रिया बहुत जटिल बना देते हैं। एमडी नुरूज्जमैन (2009) के अनुसार सामाजिक प्रतिरोध न तो विशेष रूप से ''राजनीतिक कार्रवाई का एक रूप'' और न ही एक एकमुश्त ''सांस्कृतिक प्रतिक्रिया के रूप में है,'' बल्कि व्यापक राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संदर्भ में ''अस्तित्व के लिए एक संघर्ष'' के रूप में है।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है, कि प्रतिरोध की राजनीतिन केवल राज्य को नवउदारवादी वैश्वीकरण के प्रति एक प्रतिकारी बल के रूप में कार्य करने के लिए वापस लाने की आवश्यकता का आह्‌वान करती है, बल्कि यह परस्पर संबद्ध विश्व अर्थव्यवस्था की चुनौतियों से निपटने के लिए उपयुक्त नये शासन संस्थानों का भी

आह्वान है। यह परिप्रेक्ष्य कार्ल पोलनी की प्रतिरोध की धारणा ''काउंटर–मूवमेंट'' से प्रेरित है। यह अवधारणा 18 वीं और 19 वीं सदी के दौरान इंग्लैंड में औद्योगिक पूँजीवाद के विघटनकारी और ध्रुवीकरण प्रभावों से निपटने के लिए समाज द्वारा लिए गए आत्म सुरक्षात्मक उपायों को संदर्भित करती है। वैश्वीकरण का प्रतिरोध सामाजिक रूप से परिभाषित कार्यों से विरूपित कर पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की ओर प्रवाह को पलटने का संघर्ष है। यह बाजार के नियंत्रण को पुनः प्राप्त करना है। एंटोनियो ग्राम्सी ने ''काउंटर–आधिपत्य प्रतिरोध'' की धारणा पेश की, जहाँ प्रतिरोध दीन हीन समूहों, या मातहत बलों का कार्य है, जो सामाजिक व्यवस्था को बनाने और बनाए रखने के लिए सत्तारूढ़ वर्गों द्वारा असमान पूंजीवादी विकास की स्थितियों में उपयोग की जाने वाली सत्ता की रणनीति को दुर्बल करने का निर्देश देता है (कुमार चंचल और अन्य 2017 : 72)। इस नजरिए से वैश्वीकरण का प्रतिरोध लोकतांत्रिक साधनों से राज्य पर नियंत्रण पाना है जो कि राष्ट्रीय लोकप्रिय राजनीतिक परियोजना को आगे बढ़ाने और उसके बाद वैश्वीकरण को बदलने के लिए अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक संबंधों को फिर से संगठित करने की दिशा में निर्देशित है । यह प्रतिरोध स्वीकृत और संस्थागत ज्ञान एवं विचारधारा, जो कि नव–उदारवादी वैश्वीकरण की सामान्य भावना और बाजार में उसके विश्वास को वैध करता है ,से जूझने की प्रक्रिया है । वैश्वीकरण और प्रतिरोध का एक आशाजनक सिद्धांत माइकल हार्ड्ट और एंटोनियो नेगरी के Empire (2000) और Multitude (2004) द्वारा पेश किया जाता है। हार्ड्ट और नेगरी के लिए, वैश्वीकरण एक नया साम्राज्यवादी तर्क है जो कि नेक सिद्धांतों पर आधारित युद्ध आयोजित करता है और किसी के जीवन एवं मृत्यु का निर्णय करता है । वे इसे एक जटिल प्रक्रिया के रूप में देखते हैं जिसमें वैश्विक अर्थव्यवस्था और पूँजीवादी बाजार प्रणाली के विस्तार, नई प्रौद्योगिकियों और मीडिया, शासन के विस्तारित न्यायिक और कानूनी तरीकों, और सत्ता, संप्रभुता और प्रतिरोध के आकस्मिक तरीकों के विस्तार का बहुआयामी मिश्रण शामिल है।फिर भी, राष्ट्र राज्यों के इस युग में वैश्विक शक्ति के पैमाने के रूप में, यह बहिर्गमन करता है औरइसे किसी सत्ता केंद्र विशेष या राज्य की राजधानी से नहीं जोड़ा जा सकता है। हार्ड्ट और नेगरीने आंशिक रूप से अनियोजित और वैश्विक साम्राज्य में अमेरिकी अपवाद और सैन्यीकरण की भूमिका में विफल होने के लिए आलोचना के अपने हिस्से को व्यक्त किया है। इसी तरह, थॉमस फ्रीडमैन (1999) जिसे वे ''लेक्सस'' और "जैतून का पेड़" कहते हैं के बीच एक और अधिक सौम्य अंतर बनाते हैं।'' लेक्सस "आधुनिकीकरण का, समृद्धि और विलासिता का, और पाश्चात्य खपत का प्रतीक है एवं यह"जैतून के पेड़", जो जड़ों, परंपरा, स्थान और स्थिर समुदाय का प्रतीक है, के विपरीत है। इसके विपरीत फ्रीडमैन, वैश्वीकरण की कम आलोचना करता है और वैश्वीकरण की दमनकारी विशेषताओं की गहराई एवं प्रतिरोध और विरोध के विस्तार और सीमा को समझने में विफल है। विशेष रूप से, वह पूँजीवाद और लोकतंत्र के बीच विरोधाभासों को मुखर करने में विफल रहता है, और वैश्वीकरण और उसके आर्थिक तर्क द्वारा लोकतंत्र को नजरअंदाज करने के तरीकोंके साथ–साथ इसे प्रसारित करने के तरीकों को मुखर करने में विफल है।

(Resisting Globalisation : https://pages-gseis-ucla-edu/faculty/kellner/ essays/ resistingglobal ization-pdf).

प्रतिरोध के आंदोलन लगातार उत्पन्न हो रहे हैं और बदल रहे हैं, यहां तक कि तकनीकी आविष्कार के रूप में दुनिया भर में पैदा हो रहे हैं और एक वैश्विक मीडिया

संस्कृति को जन्म दे रहे हैं जबकि आर्थिक संकट, प्राकृतिक आपदाएँ, सैन्यीकरण, और युद्ध वैश्विक स्थिति को कमजोर करने की धमकी देते हैं। इसलिए, वैश्वीकरण और प्रतिरोध के सिद्धांतों को अंततः चल रहे परिवर्तन के प्रति संवेदनशील रहना चाहिए, सख्ती से आलोचनात्मक होना चाहिए, और हठधर्मी या अत्यन्त व्याख्यात्मक होने की प्रवृत्ति पर विजय पाना चाहिए।

उपर्युक्त सैद्धांतिक योग नए समूहों और आंदोलनों, जो मोटे तौर पर वैश्विक सामाजिक न्याय या विश्व नैतिकता एजेंडा, जो मानवाधिकारों के प्रभाव और प्रभावकारिता का विस्तार करने की इच्छा में परिलक्षित होता है, के पक्ष में हैं, में से अधिकांश के वैचारिक अभिविन्यास को समझाने में मदद करते हैं। इससे अंतरराष्ट्रीय कानून प्रगाढ़ हुआ है तथा राज्यों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों पर निगरानी और दबाव बनाने के लिएनागरिक नेटवर्क विकसित हुआ है। वैश्विक नागरिक समाज टीएनसी और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के बीच तीसरी ताकत के रूप में उभरा है, जो कि न तो बाजार का प्रतिनिधित्व करता है और न ही राज्य का (कुमार चंचल और अन्य 2017 : 70)।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) इकाई के अंत में अपने उत्तर के लिए सुझाव देखें।

2. वैश्विक प्रतिरोध के सैद्धांतिक व्याख्या पर चर्चा करें?

.....

.....

.....

.....

.....

12.4 वैश्वीकरण का विरोध

वैश्वीकरण का प्रतिरोध नवउदारवादी सुधारों के विस्थापित परिणामों एवं अर्थव्यवस्था, राजनीति और पहचान/संस्कृति के क्षेत्र में इसके प्रभावों के प्रत्युत्तर में सामाजिक समूहों और व्यक्तियों के संघर्षों और कार्यों के सारे पहलू को संदर्भित करता है। (सगुइएर, मार्सेलो, 2012) प्रतिरोध के नए वैश्विक सामाजिक आंदोलनों के मूल मूल्यों में अहिंसक संघर्ष, लोकतांत्रिक प्रथा, सामाजिक न्याय, समग्रता, धर्मनिरपेक्षता, शांति, एकजुटता (स्थानीयता, संकीर्णता और संकीर्ण राष्ट्रवाद/जन्मवाद या वर्चस्व के विरोध में) और समानता (महिलाओं के खिलाफ पितृसत्तात्मक उत्पीड़न का विरोध के साथ–साथ वर्ग, जाति और जातीय आधारित भेदभाव का विरोध) शामिल हैं । महिलाओं द्वारा उच्च भागीदारी युक्त नए सामाजिक आंदोलन में विचारों और संगठनों का और ज्यादा विसरित स्वरूप दिखता है। वैश्विक सामाजिक आंदोलन घरेलू परिणाम उत्पन्न करने के लिए परदेशीय स्तर पर भी कार्य करते हैं, लेकिन वे मुख्य रूप से प्रथाओं को बदलने और विश्व राजनीति में विचारों और मानदंडों को प्रभावित करने का लक्ष्य रखते हैं। उनमें से कुछ उम्मीद करते हैं कि सूचना, अनुनय और नैतिक दबाव के उपयोग अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों और वैश्विक शासन के तंत्रों में बदलाव

में योगदान देंगे। दूसरे प्रतिस्पर्धा औचित्य को एक राजनीतिक प्रक्रिया के रूप में तैनात करते हैं और विशेष मुद्दों के आसपास अभियानों को भड़का कर सच्चे नैतिक उद्यमी बनने में संलग्न हैं। उदाहरण के लिए, भारत में "नर्मदा आंदोलन" स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय गैर–राज्य संगठनों के गठबंधन के रूप में नर्मदा नदी के किनारे विशाल बाँधों की स्थिति में सुधार लाने में और यहाँ तक कि बाँधों के एक सेट के निर्माण में सक्षम रहा है।

(Transnational Social Movements: http://socialsciences-scielo-org/pdf/s_ bpsr/ v2nse/ a01v2nse-pdf).

आज के नए सामाजिक आंदोलनों के प्रतिरोध को कई ऐतिहासिक उदाहरणों से जोड़ने के कई कारण हैं। इनमें प्रतिरोध के प्राचीन उदाहरणों से लेकर बढ़ते वैश्वीकरण के प्रतिरोध सम्मिलित हैं । उदाहरण स्वरूप लैटिन अमेरिकी लोकप्रिय शिक्षा कार्यक्रम और 1950 और 1960 के दशक में अफ्रीकी राष्ट्रवाद का उदय, भारत का चिपको आंदोलन, अमेजन के बारिश वन विनाश के खिलाफ चिको मेंडेस का संघीकरण, और 1980 के दशक में चीन के तियानानमेन स्क्वायर लोकतंत्र आंदोलन, 56 ''आईएमएफ दंगे'' जो कि लैटिन अमेरिका, कैरेबियन, अफ्रीका, यूरोप और मध्य पूर्व में 1985 से 1992 के बीच हुई, और प्रतिरोध की अभिव्यक्तियों जैसे नाइजीरिया में शेल ऑयल से लड़ने के लिए 1991 में ओगोनी लोगों के अस्तित्व के लिए आंदोलन का गठन, साथ ही दक्षिण अफ्रीका में स्व निर्धारित राष्ट्रीय एकता की एक सरकार का चुनाव और 1994 में चियापास, मेक्सिको में नेशनल लिबरेशन की जपाटीस्टा सेना का उद्‌भव। जबकि इनमें से कुछ प्रतिरोध आंदोलनक्षेत्रीयकृत थे और उनके दृष्टिकोण स्थानीय परंपराओं पर आधारित थे, जिसका उपयोग उन्होंने अनर्गल पूंजीवादी विकास के नकारात्मक और उपनिवेश प्रभावों से लड़ने के लिए किया था, अन्य आंदोलन जैसे जपातीस्तास ने हिंसक और अहिंसक विरोध के मिश्रण के माध्यम से पूंजीवादी वैश्वीकरण के खिलाफ हाल ही में हुए समूहिक एकजुटता से समानता का प्रदर्शन किया, ने दुनिया भर के असंख्य दीन लोगों और समूहों के साथ एकजुटता बनाने का प्रयास करते हैं, और उनके नए मीडिया (जैसे, इंटरनेट, फेसबुक) का विनाश प्रतिरोधी लक्ष्यों को आगे बढ़ाने वाले हथियारों के रूप में कार्य करते हैं। निर्विवाद रूप से, आज वैश्वीकरण के प्रतिरोध के बहुत से भाग को,सिवाय इंटरनेट से जुड़े नई प्रौद्योगिकियों के अपने उपयोग के अलावा, नहीं समझा जा सकता है ।

विशेष रूप से, 2001 के बाद से, विश्व सामाजिक मंच (WSF) को विश्व आर्थिक मंच (WEF) के वार्षिक प्रतिरोधी शिखर सम्मेलन के रूप में आयोजित किया गया जिसका सिद्धान्त ''एक दूसरी दुनिया संभव है'' था। इस समावेशी मंच में 100 से अधिक देशों से लाखों की संख्या में विभिन्न प्रकार के प्रतिभागियों ने भाग लिया। सामाजिक प्रथाओं और राजनीतिक गतिविधियों के परिपेक्ष्य में विश्व सामाजिक मंच को वैश्विक सामाजिक न्याय के आदर्शों के लिए किए गए एक व्यापक आंदोलन के अभिन्न अंग के रूप में देखा जा सकता है। WSF ने नवउदारवादी वैश्वीकरण मॉडल के संभावित विकल्पों को प्रतिबिम्बित करने के लिए एक उपयुक्त मंच प्रदान किया है। इसके अलावे इसे बैठकों, चर्चाओं और प्रस्तावों के लिए खुले क्षेत्रों के एक समूह के रूप में माना जा सकता है, जैसा कि फिशर और पोनियाह (2003 : 10) ने सुझाव दिया है ''इसे शिक्षण, नेटवर्किंग और राजनीतिक गठन की रचना करने वाले एक शैक्षणिक आधार के रूप में देखा जा सकता है।''

12.5 वैश्विक सामाजिक आंदोलन

मौलिक आधार पर परिवर्तनशील होने के कारण सामाजिक आंदोलन को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना मुश्किल साबित हुआ है। हालांकि, सामाजिक आंदोलन का सार प्रतिरोध है। यह यथास्थिति के खिलाफ प्रतिरोध हो सकता है, जिसमें आंदोलन के सदस्य आश्रय, भूमि और सेवाओं तक पहुँच जैसे बुनियादी मानवाधिकारों की माँग करते हैं, या अपने अधिकारों के भविष्य के उल्लंघन के खिलाफ प्रतिरोध हो सकता है क्योंकि वे सरकारी पहलों जैसे बड़े पैमाने पर बाँध निर्माण, वाणिज्यिक मत्स्य पालन या स्थानीय आजीविका के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों में संरक्षित पर्यावरण क्षेत्रों की स्थापना का विरोध करते हैं। Schlaepfer एवं अन्य (1994) ने सामाजिक आंदोलन को एक सामुदायिक संग्रहण के रूप में परिभाषित किया है जो स्थानीय समस्या के राजनीतिक प्रभाव को दर्शाता है। यथास्थिति के लिए सामाजिक आंदोलनों की चुनौतियां आम तौर पर अत्यधिक मुखर होती हैं, और इसके सदस्य अक्सर सरकार या अन्य बुद्धिजीवियों और उनकी नीतियों के विरोध में अपनी विचारधारा व्यक्त करते हैं। हालांकि सामाजिक आंदोलनों और राज्य के विभिन्न अंगों के बीच संबंध जटिल हैं।

आंदोलन अक्सर सरकार का विरोध करते हैं, लेकिन वे त्रुटि निवारण या अधिकार प्रदान करने के लिए समान रूप से इस पर निर्भर हैं। राज्य के साथ उनकी रणनीतिक बातचीत सामाजिक आंदोलन को राजनीतिक दायरे में लाती है। Foweraker (1995 : 69) बताते हैं कि 'सभी सामाजिक आंदोलनों को कुछ हद तक अपनी राजनीतिक परियोजनाओं या उनके संस्थागत और राजनीतिक परिवर्तन को प्रभावित करने के प्रयासों से परिभाषित किया जाना चाहिए।' राजनीति से प्रभावित सामाजिक आंदोलन अक्सर अपनी माँगों और गतिविधियों के मामले में अत्यधिक कट्टरपंथी और अभिनव होते हैं। आंदोलन के सदस्य अपने विचारों को विदित करने और अपनी माँगों को मुखर करने के लिए नए तरीकों की खोज करते हैं, और कई बार इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कानून तोड़ सकते हैं।

सिएटल में घटित 1999 की घटनाओं के बाद से वैश्विक शहरों में वैकल्पिक वैश्वीकरण विरोध घटनाओं की एक पृथक सहज श्रृंखला नहीं है, बल्कि आर्थिक और वित्तीय वैश्वीकरण के खिलाफ एक तीव्र समन्वित और शक्तिशाली सामाजिक आंदोलन है जो अक्सर विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ), विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों को निशाना बनाता है। इन विरोधों के माध्यम से, और विशेष रूप से 2001 में पोर्टो एलेग्रे में पहले विश्व सामाजिक मंच के बाद से आयोजित मंचों की श्रृंखला के माध्यम से, अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क, गठबंधन और आंदोलन घरेलू राजनीतिक प्रणालियों और अंतरराष्ट्रीय राजनीति दोनों को बदलने का प्रयास करते हैं। वे अंतरराष्ट्रीय एजेंडे के लिए नए मुद्दों की रचना करते हैं, नए निर्वाचन क्षेत्रों को सक्रिय करते हैं, अपने हितों और अपनी पहचान की समझ को बदलते हैं, और कभी–कभार राज्य प्रथाओं को भी बदलते हैं (खाग्राम एवं अन्य 2002)।

वैश्वीकरण को भी विभिन्न स्तरों पर नीचे से चुनौती दी जाती है। व्यक्तिगण ऐसे श्रृंखलाबद्ध कार्य कर सकते हैं जो वैश्वीकरण के पहलुओं का विरोध करते हैं । उदाहरण के लिए, फ्रांस के जोस बोव द्वारा मैकडॉनल्ड्स के विस्तार का विरोध, कई लोगों द्वारा कोका कोला, स्टारबक्स जैसे वैश्विक उत्पादनों की खरीद का विरोध, या

अपने उत्पादनों को वालमार्ट में देने से इनकार क्योंकि कम कीमतों के लिए उनकी क्रूर प्रतिबद्धता अक्सर दक्षिणवासी मजदूरों के लिए कम मजदूरी का सबब बन जाती है। जमीनी स्तर पर कईछोटे, स्थानीय रूप से सक्रिय समूह भूमंडलीकरण का विरोध करते है। तालिबान, बोको हराम, आईएसआईएस आदि जैसे कई धार्मिक कट्टरपंथी हैं जो अपने धर्म के शुद्ध संस्करण की वापसी चाहते हैं, और वैश्विक प्रक्रियाओं का विरोध करते हैं जो उन्हें लगता है कि उनकी शुद्धता के लिए खतरा है ।

12.5.1 प्रतिरोध आंदोलन : सामाजिक आंदोलनों के प्रकार

विभिन्न स्तरों पर विभिन्न प्रकार के प्रतिरोध आंदोलनों ने दुनिया के लगभग सभी हिस्सों में अपनी उपस्थिति दिखाई है। इनमें से कुछ आंदोलनों का अवलोकन निम्नलिखित है।

स्थानीय आंदोलन

वैश्वीकरण स्थानीय लोगों पर विभिन्न तरीकों से प्रतिकूल प्रभाव डालता है । यह उन्हें आजीविका के स्रोत से वंचित कर सकता है या फिर उन्हें स्थानीय बाजार आदि से विस्थापित कर सकता है। केरल के पालघाट में पीने के पानी के स्रोतों के संरक्षण और संरक्षण के लिए आदिवासी–दलित नेतृत्व वाले प्लाचिमाडा आंदोलन को स्थानीय प्रतिरोध के एक अच्छे उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। एक और उदाहरण कोझिकोड में कोराचंड किसानों द्वारा पेप्सी कोला और कोका कोला जैसी अंतरराष्ट्रीय कंपनियों के बाजार में पैठ से राहत पाने के लिए लिया गया साहसिक और वीरतापूर्ण निर्णय है ।

राष्ट्रीय आंदोलन

विभिन्न श्रमिक संगठनों, किसान संगठनों और गैर–सरकारी संगठनों (छळवे) के नेतृत्व में संघर्ष भारत में वैश्वीकरण के लिए कुछ राष्ट्रीय स्तर के प्रतिरोध की शुरुआत कर सकता है । दुनिया के अन्य हिस्सों में भी इसी तरह के प्रयास हुए हैं। संगठित किसान आंदोलनों द्वारा भारत में खेती वाले इलाके में विशेष आर्थिक क्षेत्रों (SEZs) के हालिया प्रतिरोध को राष्ट्रीय स्तर के वैश्वीकरण विरोधी संघर्ष के मामले के रूप में उद्धृत किया जा सकता है ।

वैश्विक आंदोलन

वैश्वीकरण का प्रभावी ढंग से मुकाबला करने के लिए वैश्विक स्तर पर प्रतिरोध आंदोलन आवश्यक हैं। पहले से ही इस तरह के कई आंदोलनों का आयोजन किया जा चुका है। ऐसा ही एक प्रयास है विश्व सामाजिक मंच।

दुनिया ने सिएटल और कैनकन में डब्ल्यूटीओ की मंत्रिस्तरीय बैठकय जेनोवा में जी–8 की बैठकों और दावोस में आईएमएफ/विश्व बैंक की बैठकों, जैसे जो प्रदर्शन देखेवे सभी वैश्वीकरण के लिए वैश्विक स्तर के प्रतिरोध का खुलासा करते हैं (कुरियन : 2007) ।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) इकाई के अंत में अपने उत्तर के लिए सुझाव देखें।

1. वैश्विक प्रतिरोध आंदोलन के प्रकार पर चर्चा करें?

.....

.....

.....

.....

.....

12.6 सामाजिक आंदोलन और गैर सरकारी संगठन

वैश्वीकरण के संदर्भ में अक्सर कहा जाता है कि नागरिक समाज ने गैर–राज्य अभिकर्ताओं, विशेष रूप से एमनेस्टी इंटरनेशनल, ग्रीनपीस, ऑक्सफैम इंटरनेशनल और मेडिसिन सैन्स फ्रंटिएर्स जैसे गैर–सरकारी संगठनों के अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्कों के आधार पर एक महत्वपूर्ण वैश्विक आयाम ग्रहण किया है जिनकी सदस्यता, साझा उद्देश्य और संगठनात्मक गतिविधियां राष्ट्रीय सीमाओं से परे हैं। वैश्विक नागरिक समाज ने सूचना के प्रसार, बातचीत और बहस के लिए खुले मंचों के गठन और बृहत्तर लोकतंत्र की वकालत, पारदर्शिता और सरकारी और बहुपक्षीय संस्थानों में जवाबदेही के माध्यम से शासन के एक स्रोत के रूप में कार्य किया है। इस तरह, वैश्विक नागरिक समाज या वैश्विक सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाएं शक्तिशाली लोगों को निजी तौर पर सत्ता का मालिक बनने से रोक सकती है (कीन, 2003)। इस विस्तारगामी अंतर्राष्ट्रीय या नागरिक समाज की परत का अक्सर लोकतंत्र को बढ़ाने और बाजार और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की शक्ति के लिए एक प्रतिसंतुलन प्रदान करने के रूप में स्वागत किया गया है (कुमार चंचल और अन्य 2017 : 70–71) ।

दरअसल, अंतरराष्ट्रीय गैर सरकारी संगठन (INGOs) अक्सर विविध अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क और राष्ट्रीय वकालत अभियानों में दुनिया भर के विभिन्न अभिकर्ताओं को एक साथ में लाने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। औक्स्फेम, सेव दी चिल्ड्रेन और एक्शन ऐड जैसी बड़ी दानी संस्थाओं में इन अभियानों के लिए समर्पित विभाग हैं उदाहरण के तौर पर निष्पक्ष व्यापार विभाग, जीएम फसल विभाग और बाल वेश्यावृत्ति उन्मूलन विभाग। (सामाजिक आंदोलन और गैर सरकारी संगठन : https://pdfs-semanticscholar-org/80e8/f7dfb443e7f 09554e4bf23fd769ec20c68cd-pdf11)।

वैश्विक आर्थिक प्रशासन में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका ,खास कर के 1999 के 'बैटल ऑफ सिएटल' के बाद, बहुत सारे विद्वानों के ध्यान का केंद्र हो गयी है। व्यापक रूप से वैश्वीकरण विरोधी आंदोलन के बाह्यरूपी संस्करण के दौरान वैश्विक आर्थिक प्रणाली का बहिष्कार करने के लिए नागरिक समूह सड़कों पर आकर इसका विरोध करने लगे क्योंकि वे इसे अपवर्जनात्मक, अनुचित, दुनिया भर में सामाजिक अव्यवस्थाएँ लाने वाला और पर्यावरण विनाशकारक मानते थे। (गिल 2000; हल्लिडे 2000; विल्किंसन 2006)। अपनी वैधता संकट को रोकने के प्रयास में डब्ल्यूटीओ ने

गैर–सरकारी संगठनों के साथ संबंध विस्तार किया। विद्वानों, डब्ल्यूटीओ अधिकारियों, गैर–सरकारी संगठनों और राष्ट्रीय प्रतिनिधियों द्वारा यह व्यापक रूप से तर्क दिया जाता है कि अधिक खुली व्यापार नीति निर्माण प्रक्रियाएं जिनमें गैर–सरकारी संगठन शामिल हैं,प्रतिनिधित्व किए गए हितों की विविधता के आधार पर, अधिक लोकतांत्रिक तरीके से वैध अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रणालीकी ओर ले जाएँगे।

जाहिराना तौर परकुछ गैर सरकारी संगठन कट्टरपंथी, अभिनव और राजनीतिक रूप से जुझारू हो सकते हैं, लेकिन सामाजिक आंदोलनों और गैर सरकारी संगठनों के बीच स्पष्ट संस्थागत मतभेद भी हैं। उत्तरार्द्ध उनकी संरचना से पहचाने जा सकते हैं। इसके विपरीत, सामाजिक आंदोलन अधिक तदर्थ और प्रकृति से विकासवादी होते हैं। गैर सरकारी संगठनों में निश्चित प्राथमिकताओं का एक सेट होने की संभावना अधिक होती है, जबकि सामाजिक आंदोलन अक्सर बहुत अधिक लचीले प्रवृति वाले और प्रतिक्रियाशील हो सकते हैं, क्योंकि उनके क्रिया कलाप और लक्ष्य स्थानीय और राष्ट्रीय राजनीति की अनियमितताओं एवं वैश्विक पूंजी की अस्थिरता से ग्रसित हो सकते हैं। शायद सामाजिक आंदोलनों की परिभाषा के लिए सबसे महत्वपूर्ण सदस्यता का मुद्दा है। सामाजिक आंदोलन उनके सदस्य होते हैं। इसके विपरीत, सैद्धांतिक रूप से (और कभी–कभी व्यवहारिक तौर पर भी) गैर–सरकारी संगठनों में सिर्फ एक व्यक्ति शामिल हो सकता है। जब कि एक ही व्यक्ति से बना सामाजिक आंदोलन की कल्पना करना मुश्किल होगा । सामाजिक आंदोलन अपने सदस्यों पर अत्यधिक निर्भर होते हैं जिसके लिए उन्हें लामबंद और प्रतिबद्ध रखना आवश्यक हो जाता है।

इस तरह, गैर सरकारी संगठनों को अपनी सदस्यता की तुलना में अपने आधिकारिक और संगठनात्मक लक्ष्यों, अगर वे परिभाषित हैं, द्वारा अपने कार्यशैली की संरचना को तैयार कर सकते हैं। हालांकि गैर सरकारी संगठनों ने सामाजिक आंदोलन जैसे मुद्दों को उठाया है, आलोचकों ने उनकी विचारधारा में कट्टरपंथ की कमी को महसूस किया है। हालांकि सफलता या असफलता के बाद सभी सामाजिक आंदोलन गायब नहीं हो जाएँगे। कुछ मामलों में संगठनात्मक संस्थाएँ जिन्होनें अपनी शुरुआत सामाजिक आंदोलन के रूप में की हैं वे एक गैर सरकारी संगठन, या एक गैर सरकारी संगठन की तरह इकाई, SMO (सामाजिक आंदोलन संगठन) के रूप में उभर सकती हैं।

सरकारों और कंपनियों के साथ गैर सरकारी संगठनों को वैश्विक अर्थव्यवस्था के प्रमुख अभिकर्ताओं में से एक के रूप में देखा जाता है। एक जटिल वैश्विक अर्थव्यवस्था के निर्माण का प्रभाव वस्तुओं और सेवाओं में अंतरराष्ट्रीय व्यापार से हटकर बहुआयामी है। यह यूनियनों, वाणिज्यिक निकायों, संबंधित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्थाओं में भाग लेने वाले व्यवसायों को वैश्वीकरण की ओर ले जाता है। किसी उद्योग की नीति बनाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय शासन का कोई भी रूप, चाहे वह गैर–सरकारी हो या अंतरसरकारी, इसकी गतिविधियों से संबंधित गैर–सरकारी संगठनों के बीच वैश्विक संबंधों को मजबूत करने को प्रोत्साहित करेगा ।

राज्यों के मत इस संदर्भ में भिन्न हो सकते हैं कि वे नागरिक समाज समूहों और व्यक्तियों को कितनी स्वतंत्रता दें। लेकिन सत्ता व्यवस्था के वैश्विक संतुलन आम तौर पर, जहां वे मौजूद हैं, गैर सरकारी अभिकर्ताओं को अधीनस्थ से लेकर राष्ट्रीय अभिकर्ताओं के रूप में स्थान देते हैं (नाउ, हेनरी आर, 2009)। सरकार अब अपने देश की सीमाओं के पार सूचनाओं के प्रवाह को नियंत्रित नहीं कर सकती है। प्रत्येक देश से गैर सरकारी संगठनचार तरीकों से गठबंधन कर सकते हैं : अंतरराष्ट्रीय गैर

सरकारी संगठन के रूप में, वकालत नेटवर्क केरूप में, काकेशस और शासन नेटवर्क के रूप में।गैर सरकारी संगठन प्रत्यक्ष रूप से सरकारों और कंपनियों को प्रभावित कर सकते हैं, परोक्ष रूप से व्यापार और सरकार के संबंध को संयमित एवं उनके बीच मध्यस्थता कर सकते हैं या व्यापार–सरकार–गैर सरकारी संगठन नेटवर्क के साथ नोड्स के रूप में कार्य करते हैं (दोह और हिल्डी टीगेन, 2003 : 565–66)। यह अंतरराष्ट्रीय संगठन की प्रमुख निर्णय प्रक्रिया को भी प्रभावित करता है। गैर–सरकारी संगठनों और अंतर–सरकारी संगठनों (आईजीओ) का विकास और उनकी पारस्परिक बातचीत उभरते वैश्विक शासन के प्रधान क्षेत्र हैं।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 4

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) इकाई के अंत में अपने उत्तर के लिए सुझाव देखें।

1. सामाजिक आंदोलन में गैर–सरकारी संगठनों की क्या भूमिका है?

.....

.....

.....

.....

.....

12.7 सारांश

वास्तव में वैश्वीकरण और इसके विरोधियों ने अपनी प्रक्रियाओं और प्रभाव के स्थापन और होड़ के रूप में वैश्वीकरण की प्रक्रिया को मजबूत किया है। सैद्धांतिक और व्यावहारिक सवाल पूछे जा सकते हैं कि क्या वैश्विक प्रतिरोध के नए सामाजिक आंदोलन वैश्विक राजनीति में एक काउंटर आधिपत्य ब्लॉक के रूप में काम करने में और वैश्विक प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने में सक्षम हैं ।

उपर्युक्त चर्चा यह दर्शाती है कि वैश्विक नागरिक समाज वैश्विक समस्याओं के समाधान के लिए वैश्विक सहयोग और समन्वय जैसे रचनातंत्र प्रदान करता है। वैश्विक नागरिक समाज संगठन (या GSCOs) विभिन्न वैश्विक परस्पर विरोधी मुद्दों पर अपने विचार देते हैं, नागरिकों के बीच इन मुद्दों पर बहस को प्रोत्साहित करते हैं और वैश्विक शासन के लोकतंत्रीकरण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। वैश्विक नागरिक समाज संगठन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नीति निर्माण पर प्रभावी प्रभाव डालने में सफल रहे हैं । ये संगठन वैश्विक शासन के साधन हैं और राष्ट्रीय सरकारों या यहाँ तक कि अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की तुलना में स्थानीय समस्याओं का अधिक प्रभावी समाधान प्रदान करके अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के मानदंडों को बदल रहे हैं, और पारंपरिक सत्ता की राजनीति के एक शक्तिशाली तोड़ के रूप में कार्य कर रहे हैं। वैश्विक नागरिक समाज नागरिकों को वैश्विक मुद्दों से अधिक अवगत कराता है और वैश्वीकरण और राष्ट्र राज्यों के बीच सकारात्मक और संतुलनकारी भूमिका निभाता है। वे वैश्विक शासन की सार्वजनिक शिक्षा में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, जो नागरिकों को नियामक प्रक्रियाओं में सार्थक रूप से शामिल होने योग्य बनाता है और वैश्विकशासन

के वर्तमान और संभावित भविष्य के पाठ्यक्रमों के बारे में सार्वजनिक बहस को प्रोत्साहित कर सकता है। हालाँकि पूँजीवादी वैश्वीकरण के प्रतिरोध की इस नई लहर में असली चुनौती कार्रवाई की गति बनाए रखना ,वैश्विक एकजुटता को बनाए रखना और अधिक ठोस राजनीतिक परिणाम हासिल करना है। आंदोलन की विविधता एवं भागीदारी, समग्रता और स्वायत्तता पर उनका प्रतिरोध नए आंदोलनों को उनकी वास्तविक ताकत देता है। हालांकि, ये वही गुण हैं जो वैश्विक आंदोलनों को प्रतिरोध की नई वैश्विक राजनीति में राजनीतिक प्रतिनिधित्व और संगठन की समस्या को हल करने में चुनौती देते हैं। वैश्विक नागरिक समाज और गैर–राज्य अभिकर्ता तेजी से वैश्विक शासन का एक नया स्तंभ बन रहे हैं ।

वैश्विक नागरिक समाज के समर्थकों का तर्क है कि उन्होंने प्रभावी रूप से वैश्विक शक्ति का पुनर्विन्यास किया है, जो विश्व व्यवस्था को सभ्य बनाने की लोकतांत्रिक दृष्टि को एक प्रकार से परिवर्तित करता है। हालांकि, राज्यों को लगता है कि वे वैश्विक नागरिक समाज का प्रबंधन करने और अक्सर सह–विकल्प बनाने में सफल रहे हैं। इस आपसी जीत का एक अच्छा उदाहरण विभिन्न अंतरराष्ट्रीय गैर सरकारी संगठन हैं। अंतरराष्ट्रीय गैर सरकारी संगठन (INGOs)कई क्षेत्रों – वाणिज्यिक, पर्यावरण, मानवाधिकारों, आदि के वैश्विक मामलों में एक बडेक स्थान पर कब्जा करने के लिए आए हैं और तेजी से सरकार के साथ संबंधों को प्रभावित करते हैं। इस तरह से गैर–सरकारी संगठनों ने राज्यों को बुनियादी मानवाधिकारों, गरीबी, श्रम अधिकारों, स्वास्थ्य और पर्यावरण जैसे क्षेत्रों का सम्मान करने की दिशा में भी लाया है और वास्तव में राज्य को वैश्विक समाधान पेश करने के समीप आने को मजबूर किया जाता है।

हालांकि, राजनीतिक रूप से आवेशित सामाजिक आंदोलन राजनीतिक तख्ता पलट के पारंपरिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक माध्यम के रूप में अपनी शक्ति का उपयोग करते हैं और अक्सर ये राजनीतिक रूप से महत्वाकांक्षी व्यक्तियोंध्नेताओं के नेतृत्व में होते हैं। कई बार, इस तरह के आंदोलन वास्तव में वैध तरीके से निर्वाचित सरकारों को गद्दी से उतारने के लिए निर्मित या समर्थित होते हैं।

इसलिए प्रतिरोध आंदोलन एक नए सार्वजनिक क्षेत्र के वैश्विक नागरिक समाज की शुरुआत का गठन कर सकते हैं जो स्वायत्तता, लोकतंत्र, शांति, पारिस्थितिक स्थिरता और सामाजिक न्याय जैसे प्रगतिशील मूल्यों को बनाए रख सकता है । हालांकि, दीर्घकालिक सार्थक तरीके से सफल होने के लिए उन्हें जवाबदेह, पारदर्शी और व्यक्तित्व पंथ से मुक्त होना चाहिए। दूसरी ओर, राज्यों को नई ताकतों को संलग्न करने और इन आंदोलनों द्वारा नागरिकों में उत्पन्न अपेक्षाओं के साथ अपनेअनुपालन को प्रदर्शित करने में तेजी से माहिर बनना होगा ।

12.8 संदर्भ ग्रंथ

गिल्स, बैरी के., (2000) (एड), *ग्लोबलाइजेशन एण्ड दि पॉलिटिक्स ऑफ रजिस्टेंस,* न्यू यॉर्क, स्ट. मार्टिन'ज प्रैस

बुज़ान, बैरी, (2004), *फ्रॉम इंटरनेशनल टू वर्ल्ड सोसाइटी?,* कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज : यूनिवर्सिटी प्रैस।

केआन, जे., (2003), *ग्लोबल सिविल सोसाइटी?,* कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज : यूनिवर्सिटी प्रैस।

केआन, जे., (2018), 'रेसिस्टिंग ग्लोबलाइजेशन', एक्सेस ऑन नवम्बर 19, 2018 https:// pages.gseis.ucla.edu/faculty/kellner/essays/resistingglobalization.pdf

कुमार चंचल, लंगथुइयांग रियामेई एण्ड संजू गुप्ता (2017), *अण्डर्स्टैंडिंग ग्लोबल पॉलिटिक्स*, न्यू डेल्ही : के डब्ल्यू पब्लिशर्स प्रा. लि.।

काल्दोर, मैरी (2000), 'सिविलाइजिंग ग्लोबलाइजेशन : दि इम्प्लिकेशंस ऑफ दि बैटल ऑफ सैटल', *मिलेनियम : ए जर्नल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज*, 29/4 : 105–14

चिन, क्रिस्टाइन बी.एन. एण्ड जेम्स एच. मिट्टलमैन, (2000), ''कॉन्सेप्चुअलाइजेशन रेजिस्टेंस टू ग्लोबलाइजेशन,'' इन बैरी के. गिल्स (एड.), *ग्लोबलाइजेशन एण्ड दि पॉलिटिक्स ऑफ रजिस्टेंस,* लंदन एण्ड न्यू यॉर्क : मैकमिलन प्रैस लि. एण्ड स्ट. मार्टिन'ज प्रैस आईएनसी.

मोहम्मद नुरूज़्ज़ामन, (2009), *ग्लोबलाइजेशन एण्ड रजिस्टेंस मूवमेंट्स इन दि पेरीफेरी : एन अल्टर्नेटिव थियोरेटिकल अप्रोच*, एक्सेस ऑन ऑक्टूबर 10, 2018https:// www.researchgate.net/publication/250147287_Globalization_and_Resistance_Movements_in_the_Periphery_An_Alternative_Theoretical_Approach

हार्ड्ट, एम. एण्ड ए. नेग्री (2000), *ऐम्पायर*, कैम्ब्रिज : हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस।

हार्ड्ट, एम. एण्ड ए. नेग्री (2004), *मल्टिट्यूड : वार एण्ड डेमोक्रेसी इन दि एज ऑफ एम्पायर*, न्यू यॉर्क : दि पेंगूईन प्रैस।

फ्रीडमैन, टी. (1999), *दि लेक्सस एण्ड दि ऑलिव ट्री*, न्यू यॉर्क : फर्रार स्ट्रॉस जिरॉक्स

सागुयेर, मार्सेलो, (2012), रजिस्टेंस टू ग्लोबलाइजेशन, एक्सेस ऑन नवम्बर 19, 2018https://www.researchgate.net/publication/269104537_Resistance_to_Globalization

खग्राम, संजीव, जेम्स रिकेर, एण्ड कैथ्रीन सिक्किंक, (2002), *''फ्रॉम सैंशियागो टू सीट्ल'' : ट्रांसनैश्नल एड्वोकेसी ग्रुप्स रिस्ट्रक्चरिंग वर्ल्ड पॉलिटिक्स*, इन रिस्ट्रक्चरिंग वर्ल्ड पॉलिटिक्स, ट्रांसनैश्नल सोशल मूवमेंट्स, नेटवर्क्स, एण्ड नॉर्म्स, ऐडिटेड एस. खग्रम, जे. रिकेर एण्ड के. सिक्किंक, मिन्निापोलिस : यूनिवर्सिटी ऑफ मिन्निएसोटा प्रैस।

कार्लोस, आर.एस. मिलानी एण्ड रूथी नादिया लानियादो (2007), *ट्रांसनैश्नल सोशल मूवमेंट्स एण्ड दि ग्लोबलाइजेशन ऐजेण्डा : ए मेथोडोलोजिकल अप्रोच बेस्ड ऑन दि ऐनालाइसिस ऑफ दि वर्ल्ड सोशल फार्यूम,* ऐक्सेस ऑन नवम्बर 19, 2018 http:// socialsciences.scielo.org/pdf/s_bpsr/v2nse/a01v2nse.pdf

फिशर, विलियम, एण्ड थॉमस पोन्निआह (2003), *अन ऑट्रे मोन्डे ऐस्ट पौस्सिबल*, पैरिस : पैरांगोन

श्लीपफेर, सी., जी. रॉड्रीगुएस वियाना एण्ड एस. मोरेट्टी (1994), 'कम्यूनिटी डेवलपमेंट एण्ड सोशल मूवमेंट्स : एन एक्सपीरियेंस ऑफ सोलिडैरिटी एण्ड सिटिजनशिप इन ब्राज़ील', *कम्यूनिटी डवलपमेंट जर्नल* 29 : 4.

फॉवेरकेर, जे. (1995), *थियोराजिंग सोशल मूवमेंट्स*, लन्दन : प्ल्यूटो प्रैस।

क्यूरिआन, वी. मैथ्यू (2007), ''अल्टर्नेटिव टू ग्लोबलाइजेशन : ए सर्च' इन *मेंन्स्ट्रीम,* वॉल्यूम–एक्सएलवी, नं.35, सैचर्डे 18 अगस्त 2007

इअर्ले, लूसी, (2004), सोशल मूवमेंट्स एण्ड एनजीओ'ज : ए प्रिलिमिनरी इन्वस्टिगेशन, एक्सेस ऑन अक्तूबर 16, 2018
https://pdfs.semanticscholar.org/80e8/f7dfb443e7f09554e4b
f23fd769ec20c68cd.pdf11

गिल, स्टीफन (2000), टूवर्ड ए पोस्टमॉर्डर्न प्रिंस? दि बैटल ऑफ सीटल ऐज ए मोमेंट इन दि न्यू पॉलिटिक्स ऑफ ग्लोबलाइजेशन, *मिलेनियम : जर्नल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज,* 29.1 : 131–140

हैलीडे, फ्रेड (2000), गेटिंग रियल अबाउट सीएटल, *मिलेनियम : जर्नल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज,* 29.1: 123-129.

विल्किंसन, रॉरडेन (2006), दि डब्ल्यूटीओ : क्राइसिस एण्ड दि गवनेंस ऑफ ग्लोबल ट्रेड, ऐबिंगडन, यू.के. : रूटलेज

नाउ, हेनरी आर., (2009), *पर्सपेक्टिव ऑन इंटरनेशनल रिलेशंस,* वाशिंगटन डीसी : सीक्यू प्रैस।

दोह, जोनाथन पी., एण्ड हिल्डी टीगेन (2003), ''ग्लोबलाइजेशन एण्ड एनजीओ'ज : ट्रांसफोर्मिंग बिजनेस, गवर्नमेंट एण्ड सोसाइटी'', *जर्नल ऑफ इंटरनेशनल बिजनेस स्टडीज, पृ.565–66*

मिश्रा, विवेक कुमार, (2012), दिरोल ऑफ ग्लोबल सिविल सोसाइटी इन ग्लोबल गवर्नेंस, एक्सेस आफन नवम्बर 19, 2018
http://gjestenv.com/Current_Issue/vol_1/Gjest_1202.pdf

12.9 अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यासों के उत्तर

अपनी प्रगति की जाँच करें अभ्यास 1

आपके उत्तर में वैश्वीकरण की परिभाषाएँ और वैश्वीकरण विरोधी आंदोलनों के साथ इसके संबंध शामिल होना चाहिए ।

अपनी प्रगति की जाँच करें अभ्यास 2

उत्तर में मिचेल हार्ड और एंटोनियो नेगरी सिद्धांत और वैश्विक प्रतिरोध के थॉमस फ्रीडमैन के स्पष्टीकरण पर प्रकाश डालें ।

अपनी प्रगति की जाँच करें अभ्यास 3

आपके उत्तरमें स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक सामाजिक आंदोलनों पर प्रकाश डाला जाना चाहिए।

अपनी प्रगति की जाँच करें अभ्यास 4

गैर सरकारी संगठनों कीवकालत के रूप में, लोगों और उसके शासन को जोड़नेवाले संस्थान के रूप में और वैश्विक शासन के एक उभरते केंद्रीय क्षेत्रके रूप में महत्वपूर्ण भूमिका को प्रकाशित करें।